मानसिंह आमेर व राणा प्रताप के मध्य संबंधों व रामप्रसाद हाथी प्रकरण का ऐतिहासिक मूल्यांकन

*भगवान सिंह शेखावत

शोध सारांश :–

मुगल सल्तनत व राजपूताना की मेवाड़ रियासत का संबंध मध्यकालीन राजनीतिक इतिहास का सर्वाधिक रोचक व महत्वपूर्ण अध्याय है। मुगलों की ओर से संस्थापक बाबर से औरंगजेब तक इस रियासत को मुगल ध्वज पताका के अधीन लाने का प्रयास किया गया वही मेवाड़ की ओर से राणा सांगा से राणा राजसिंह तक संप्रभुता की रक्षा का भरसक प्रयास किया गया। दोनों शक्तियों के संबंधों की राजनीति में आम्बेर के मानसिंह की मुगल मनसबदार के रूप में उल्लेखनीय भूमिका रही। मानसिंह–प्रताप उदय सागर पाल भोजन विवाद, रामप्रसाद हाथी प्रकरण, हल्दीघाटी युद्ध घटनाक्रम ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है जिनके विश्लेषण से मानसिंह–प्रताप के संबंधों को सही रूप में समझा जा सकता है।

संकेताक्षर :– मुगल, मेवाड़, बादशाह, उदयसागर, मनसबदार, रामप्रसाद, महाराणा, रियासत, आमेर

मध्यकालीन राजनीति इतिहास में मुगल सल्तनत व मेवाड़ रियासत का संबंध रोमांचक अध्याय है। बाबर– सांगा, हुमायूं–कर्मावती, अकबर–प्रताप, औरंगजेब–राज सिंह के मध्य संबंधों का विश्लेषण विभिन्न इतिहासकारों ने किया है। अकबर–राणा प्रताप के काल में मुगल–मेवाड़ संबंधों में आमेर रियासत के कुंअर मानसिंह की भूमिका मुगल सत्ता के प्रतिनिधि के रूप में उल्लेखनीय रही है। कुंवर मान सिंह का जन्म 21 दिसंबर 1550 ई. को हुआ जिनके पिता राजा भगवन्तदास व माता रानी भगोती (भगवती) पंवार जी थे। 12 वर्ष की उम्र में 1562 ई. में मानसिंह, बादशाह की दृष्टि की शुभकिरणों से उज्ज्वल या महान् बना और उसे शाही सेना में स्थाई नियुक्ति मिली।[1]

अकबरनामा में यह उल्लेख मिलता है कि अक्टूबर 1567 में बादशाह द्वारा चित्तौड़ पर आक्रमण के समय राजा भगवन्तदास शाही शिविर में था, तब संभवतः बालक कुंअर मानसिंह अपने पिता के साथ मौजूद था। उधर 1572 में प्रताप (कीका) का गोगुंदा में राज्याभिषेक हुआ, राणा प्रताप को मुगलों से संघर्ष विरासत में मिला जिसे उसने स्वाभिमान व जिजीविषा से अमरगाथा बना दिया।

मुगल बादशाह के प्रतिनिधि के रूप में कुंअर मानसिंह व राणा प्रताप का संघर्ष हल्दीघाटी युद्ध (1576 ई.) में हुआ। हल्दीघाटी युद्ध के कारणों का इतिहासकारों ने विभिन्न दृष्टि से वर्णन किया है। अबुलफजल लिखता है – '' राणा ने धूर्तता और कपटाचरण की सभी सीमाएं तोड़ दी।''[2] हालांकि अबुलफजल ने राणा की धूर्तता करने का तथ्य प्रस्तुत नहीं किया जो उसकी पूर्वाग्रह दृष्टि को स्पष्ट करता है। कर्नल जेम्स टॉड ने मुगल–मेवाड़ संबंधों की विवेचना करते हुए ''उदयसागर पाल भोजन विवाद'' घटना का रोचक उल्लेख करते हुए इसे युद्ध का कारण बताया है।

टॉड लिखता है – ''राजा मान ने शोलापुर विजय कर हिंदुस्तान लौटते हुए प्रताप से मिलने की अभिलाषा की जो उस समय कुंभलगढ़ में था। वह मान सिंह से मिलने हेतु व उसका स्वागत करने हेतु उदयसागर झील पर आया। आमेर के राजकुमार हेतु भोज का आयोजन किया गया। भोजन थाल लगाया गया, राजा को बुलाया गया और राजकुमार अमर को उनकी आवभगत के लिए नियुक्त किया गया परंतु राजा नहीं आये। राणा की अनुपस्थिति के लिए अमर ने सिरदर्द का बहाना बताकर असमर्थता व्यक्त की गई। कुंअर ने उच्च व आदरपूर्वक लहजे में उत्तर दिया 'राणा को बता दो कि मैं उनके सिर दर्द के कारण का अनुमान कर सकता हूं, लेकिन यह भूल सुधारने योग्य नहीं है और यदि वह मेरे साथ कांसा खाने से मना करते हैं तो कौन इस कांसे से को खाएगा ? बहानेबाजी करना व्यर्थ है। राजा मान ने भोजन का स्पर्श नहीं किया, अन्नदेव को अर्पित कर कुछ चावल के दाने सम्मान स्वरूप पगड़ी के बांध लिए और यह कहते हुए निकले – 'तुम्हारे सम्मान की रक्षा के लिए हमने अपने स्वयं के सम्मान का बलिदान कर दिया और हमारी बहन–बेटियों को तुर्कों को दे दिया लेकिन संकट में दृढ़ता रखना, यदि यही तुम्हारा निश्चय है तो, इस देश पर तुम्हारा अधिकार नहीं रहेगा।[3]

मुहणोत नैणसी ने भी उदयसागर झील पर घटित घटनाओं का वर्णन किया है[4] और इसमें भी कर्नल जेम्स टॉड द्वारा वर्णित तथ्यों में समानता है। जयपुर वंशावली[5] में हाथी प्रकरण का उल्लेख मिलता है जिसे हल्दीघाटी युद्ध का कारण बताया है, कछवाहा वंशावली (डॉ. हुकुम सिंह भाटी) ने भी इसका वर्णन किया है – ''कुंअर मानसिंह जब गुजरात विजय अभियान से लौट रहे थे तब राणा प्रताप शासित क्षेत्र में रुके। राणा के पास ''रामप्रसाद'' नामक अनेक विशेषताओं से युक्त हाथी था। हाथी देखने में बड़ा सुंदर, वैभवपूर्ण व आकर्षक था। युद्ध भूमि में वह सैकड़ों हाथियों को पटकनी लगा देता था। बादशाह अकबर इस हाथी की विलक्षणताओं से बहुत प्रभावित था तथा उसने राणा से यह हाथी चाहा था परंतु उसकी इच्छा पूरी नहीं की गई। कुंअर मानसिंह उस हाथी को देखने हेतु गये।

डॉ. रघुवीर सिंह ने उदयसागर पाल भोजन विवाद से असहमति व्यक्त करते हुए कहा है कि टॉड का यह वर्णन अतिरंजित है और स्थानीय ख्यात और लोक प्रवादों पर आधारित है[6] जिसे ऐतिहासिक तथ्य के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता। तात्कालिक किसी भी मुस्लिम लेखक ने इस घटना का वर्णन नहीं किया है। हालांकि यह स्पष्ट है कि भोजन विवाद या रामप्रसाद हाथी का प्रकरण हल्दीघाटी युद्ध का कारण नहीं था, वास्तविक अकबर–मानसिंह (मुगल पक्ष) संघर्ष का कारण अकबर की साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षी नीति थी जिसमें राणा प्रताप अवरोधक था। अंतिम समय तक कूटनीतिक दूतों के माध्यम से संधि के प्रयास भी शाही पक्ष की तरफ से हुए परंतु इस बार मुकाबला मुगल राजनीति का मेवाड़ी स्वाभिमान से था अतः युद्ध तो देर सवेर स्वाभाविक ही था, इन घटनाओं ने आग में घी का काम अवश्य किया होगा, इससे इंकार नहीं किया जा सकता।

हल्दीघाटी युद्ध में शाही सेना का नेतृत्व मानसिंह ने किया इस बात का उल्लेख बदायूंनी ने किया है, जो युद्ध का प्रत्यक्षदर्शी था। जगदीश मंदिर, उदयपुर के शिलालेख में भी अकबर की सेना के सेनापति के रूप में कुंअर मानसिंह का वर्णन मिलता है।

कृत्वा करै खंगलता स्ववल्लयां

प्रताप सिंह समुपागते प्रगे।

सा खंडिता मानवती द्विषरयमुः

संकोचयन्ती चरणै पराङ्गमुखी।[7]

अर्थात् ''अपनी प्रिय तलवार को हाथ में लेकर प्रताप उस दिन प्रातः ही लड़ाई में कूद गये। मानसिंह के नेतृत्व वाली शत्रु सेना तितर–बितर होकर भाग गयी।''

हल्दीघाटी युद्ध में रामप्रसाद हाथी ने भी अद्भुत रणकौशल दिखाया। युद्ध में यह हाथी शाही सेना के लिए आतंक बन गया जिसने कई मुगल सैनिकों को मार दिया। इसका सामना 'गजराज' जो कि कमाल खान के नेतृत्व में लड़ रहा था और 'रनमंदर' जो कि पांजू के नेतृत्व में था द्वारा हुआ। राम प्रसाद ने रनमंदर पर बुरी तरह हमला किया कि वह युद्ध क्षेत्र छोड़ने वाला ही था कि दुर्भाग्य से 'रामप्रसाद' का महावत एक तीर का शिकार हो गया। इसका लाभ उठाते हुए बिना समय गवाएं बादशाही सेना के हाथी गजमुक्ता के चालक ने 'रामप्रसाद' की पीठ पर कूदकर उसे अपने नियंत्रण में ले लिया।[8] इस प्रकार रामप्रसाद हाथी जिस पर मुगलों की विशिष्ट नजर थी को कैद कर लिया गया, रामप्रसाद हाथी हल्दीघाटी युद्ध के इनाम के रूप में अकबर को प्राप्त हो गया। हल्दीघाटी युद्ध का सजीव वर्णन बदायूंनी ने किया है हालांकि उसका दृष्टिकोण संकुचित था।

बदायूनी लिखता है – '' लगभग 500 आदमी युद्ध के मैदान में काम आए जिनमें से 150 मुसलमान और बाकी हिंदू थे।''[9] इस्लाम के खिलाड़ी योद्धा, जो घायल हुए उनकी संख्या 300 के ऊपर थी।" बदायूंनी के कहने का तात्पर्य है कि बादशाही सेना में घायल हुए लोगो की संख्या की ओर वह कोई संकेत नहीं करता है। अबुलफजल बताता है – युद्ध के मैदान में 150 गाजी मरे और शत्रुओं के 500 से ज्यादा प्रमुख आदमी विनाश की धूल में कत्ल कर दिया गए। हल्दीघाटी युद्ध का मूल्यांकन करें तो स्पष्ट है कि यह युद्ध ना तो सैनिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था ना ही इस युद्ध का कोई राजनीतिक संदेश सामने आया। शाही पक्ष राणा को ना पकड़ पाया और ना ही अधीनता स्वीकार करने के लिए मजबूर कर पाया।

अबुल फजल करता है – 'कड़ी गर्मी व युद्ध की थकान के कारण बादशाही सेना के लोगों का दिल शत्रुओं का पीछा करने को तैयार नहीं हुआ।[10] टॉड और कुछ स्थानीय कथा लेखकों ने राणा के भाग जाने, खुरासानी वह मुल्तानी सैनिकों द्वारा उनका पीछा करने, राणा कि अपने भाई शक्तिसिंह से नाटकीय ढंग से भेंट और राणा के प्रिय घोड़े चेतक के बारे में एकऔर राणा के प्रिय घोड़े चेतक के बारे में एक रोचक कहानी प्रस्तुत की है जिसकी ऐतिहासिकता सिद्ध नहीं होती है। युद्ध उपरांत बादशाह ने मानसिंह पर कुछ समय के लिए दरबार में आने पर रोक लगा दी।

उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि मुगल–मेवाड़ संघर्ष दोनो शक्तियों के मध्य साम्राज्यवाद व स्वाभिमान का संघर्ष था जिसमें आमेर के राजा मानसिंह ने राणा प्रताप के स्वजातिय होने के बावजूद शाही उत्तरदायित्व को बखूबी संभाला।

***सहायक आचार्य**
इतिहास विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर (राजस्थान)

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :–

1. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग–2 (अनुवादक मथुरा लाल शर्मा), राधा पब्लिकेशन, दिल्ली, 2021 पृ. 221
2. वही, पृ. 236

3. राजीव नयन प्रसाद, राजा मान सिंह आमेर, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, पृ. 66–67
4. मुहणौत नैणसी की ख्यात, I, पृ. 65
5. जयपुर वंशावली, (जयपुर स्टेट आर्काइव्ज, मूल प्रति बिट्रिश म्युजियम)
6. रघुवीर सिंह, पूर्व आधुनिक राजस्थान, पृ. 51
7. उदयपुर जगदीश मंदिर का शिलालेख, छंद 41, 42
8. राजीव नयन प्रसाद, राजा मानसिंह आमेर, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, पृ. 79
9. बदायूंनी, मुन्तखब उत तवारीख, II, पृ. 239
10. अकबरनामा, III, पृ. 247